

1. पूजा गीत

वन्दना के इन स्वरोँ में, एक स्वर मेरा मिला लो।

तब कभी माँ को न भूलो,

राग में जब मत झूलो,

अर्चना के रत्न कण में एक कण मेरा मिला लो।

जब हृदय का तार बोले,

शृंखला के बन्ध खोले,

हों जहाँ बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।

जय जय निर्भर हे

जय जय निर्भर हे!

जय जय जय हे!

आत्म नियन्ता, आत्म तपस्वी,

सत्य सबल दुर्भेद्य मनस्वी,

रण-प्रण-व्रण-मय अमर यशस्वी,

बलमय, बलिमय हे!

जय जय जय हे!

दीन दलित जनगण के गाता,

मृत हत जीवन जन्म विधाता।

युग युग अक्षम हे!

जय जय निर्भय हे!

शोषित पीड़ित जन के नायक,

नवयुग, नवजग राष्ट्र विधायक,

महामुक्ति के कर्मठ गायक।

भव अरुणोदय हे!

जय जय निर्भय हे!

* अभ्यास *

1. कवि भरतमाता की वन्दा में क्या अर्पित करना चाहता है ?
2. कवि किस महापुरुष की जय बोल रहा है तथा किन शब्दों में ?